International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 152-153

रामायण काल में नारियों की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति : एक विश्लेषण

डॉ० रजनीश राय
समाजकार्य एवं मानव विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

सभ्यता के सृजन के दो शिल्पी क्रमशः स्त्री और पुरूष, एक के अभाव में दूसरा अधूरा है। दोनों के परस्पर व्यापी सम्बन्धों से ही जीवन को गतिशीलता मिलती है। गति ही प्रगति का मूल है। अतः नैसर्गिक रूप से समाज के सर्वांगीण विकास में नारी की भूमिका को अस्वीकार करना सत्य से मुँह मोड़ने के अलावा दूसरा कुछ नहीं कहा जा सकता।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही स्त्री एवं पुरूष की उपस्थिति अन्योन्याश्रित रही है। सम्पूर्ण सृष्टि ही नर–नारी मय है अतः नारी का अस्तित्व सृष्टि की जीवन्तता का पर्याय है। नारी सभयता के सृजन की शिल्पी है। नारी संस्कार की प्रथम पाठशाला है। नारी सृष्टि की निरंतरता की प्रतीक है। नारी आधी आबादी है। आधी आबादी की सामाजिक राजनीतिक एवं वैचारिक गवेषणा के बिना समाज विज्ञान का अध्ययन एवं अनुशीलन अधूरा प्रतीत होता है। अस्सी एवं नब्बे के दशक भारत में सामाजिक राजनीतिक विकास के परिवर्तन का निर्णायक समय है। इस समय आधी आबादी में किस प्रकार की नारी चेतना थी तथा उसमें किस प्रकार क्रमिक परिवर्तन हो रहा था इस पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है।

यदि हम सामाजिक परिवेश पर ध्यान दें तो दृष्टिगोचर होता है कि भारतीय जीवन प्रणाली की अर्थिकता का आधार नारी ही रही है। समाज में नारी अपने अनेक रूपों के साथ उपस्थित रही है। जननी, जाया, भगिनी व संगिनी बनकर वह पुरूषों को परिवार एवं समाज से आबद्ध करती रही है। अतः नारी सेतु है। नारी के गुण ममता, लज्जा एवं सहिष्णुता माने गये हैं एवं पुरूष के गुण शौर्य, कठोरता एवं निर्ममता आदि माने गये हैं। नर में बुद्धि पक्ष की प्रधानता होती है तो नारी में भाव–पक्ष की प्रधानता रही है। नारी की इसी गरिमा व महत्ता के कारण हिन्दू धर्म कथाओं में अर्द्धनारीश्वर की कल्पना की गयी है। प्राचीन वाङ्गमय में भारतीय नीति–संहिता के विधायक महर्षि मनु ने नारी की महत्ता को घोषित करते हुए कहा या कि–यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता

महाकाव्य काल में नारी की स्थिति उत्तर–वैदिक काल से भी हीन हो गयी थी। इस समय देश में शान्ति तथा समृद्धि थी जिससे जीवन आशंकाओं से रहित था इन कारणों से विलासिता की स्थिति बढ़ गयी नारी शिक्षा पर भी इसका दुष्प्रभाव पड़ा था।

रमायण काल में नारी का स्थान सर्वत्र एक सा नहीं दिखायी देता है कही पर उसे बहुत श्रद्धा के साथ देखा गया है तो कहीं अत्यन्त ही शंका की दृष्टि से देखा गया है। विशेष तौर पर राम–चरित–मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास ने कहीं अत्यधिक वंदनीय बनाया है तो कहीं ताड़ना का अधिकारी बताया है।

रामायण काल में कन्या के विवाह के लिए स्वयम्बर प्रथा का प्रचलन था फिर भी कन्या पति चुनने में स्वतंत्र नहीं थी क्योंकि पिता द्वारा लादी गयी शर्तो का पूरा करने वाला व्यक्ति ही उसका वर होता था। इस समय अन्तर्जातीय विवाह भी प्रचलन में था। श्रवण के पिता वैश्य एवं माता शूद्र थी। इस काल में नारी की स्थिति का अनुमान राजा जनक द्वारा राम विवाह पर दासियों को दान देने तथा भरत के स्वागत के लिए गणिकाओं को बुलाने जाने एवं गणिकाओं द्वारा प्रस्तुत नृत्य कार्यक्रम से नारी की दारूण दशा का अनुमान लगाया जा सकता है।

इस समय पतिव्रत धर्म का निर्वाह नारी के लिए सर्वोच्च माना जाता था पति को देव तुल्य समझना उसका धर्म था। दुःशीला, कामी एवं असंयमी नारी को पति को समझने का अधिकार प्राप्त नहीं था, इस युग की नारी निम्नता का ज्वलंत उदाहरण है।[39]

इस काल में कन्या उपेक्षा के पात्र नहीं थी। कन्याओं को मंगलमयी तथा उसकी उपस्थिति को शुभ माना जाता था।[40] उनकी शिक्षाओं पर ध्यान दिया जाता था। अनेक बालिकायें नृत्य, गीत, संगीत विशारद तथा वाद्य यंत्रों के प्रयोग में प्रवीण थी।[41]

नारी के बाहर आने–जाने पर प्रतिबन्ध नहीं था। वनगमन के अवसर पर अयोध्या के राज मार्ग पर सीता को राम के साथ अयोध्या वासियों ने देखा था। युद्ध काण्ड में वर्णित है कि विपत्ति काल में यथा युद्ध, स्वयंवर एवं यज्ञों के अवसर पर नारी को देखने में कोई दोष नहीं है।[42]

नारी सौन्दर्य का चित्रण भी रामायण में मिलता है। सौन्दर्य को अधिक मोहक बनाने के लिए वाह्य साधनों का प्रयोग किया जाता था।[43] नारियां शरीर को विविध आभूषणों, पुष्पों एवं मालाओं से अलंकृत करती थी।[44] वैधव्य को इस समय घोर विपत्ति माना जाता था।[44] फिर भी विधवाओं का अनादर नहीं होता था। राजा दशरथ की विधवा रानियां सम्मान पूर्ण जीवन व्यतीत करती थीं। सीता, सुनैना, तारा व मंदोदरी आदर्श नारियां मानी गयी हैं ये धर्म परायण होने के साथ–साथ राजनीति में भी निपुण थी। राजमहिषी कौशल्या पति व्रत धर्म की अग्रदूतिका होने के साथ–साथ आदर्श माँ भी थीं। वह धर्म नीति व परिवार नीति में कुशल थी, तभी तो वनवास की घटना सुनकर वह अपना संतुलन नहीं खोती हैं क्योंकि इससे माता–पिता के वचनों का उल्लंघन तो होता ही साथ ही बन्धु विरोध का सम्भावाना भी हो सकती थी। जो राजनीतिक के विरूद्ध था।[45] सुनैना, मंदोदरी एवं तारा ने पति भक्ति के साथ राजनीति में क्रियाशील रहकर अर्द्धांगिनी के धर्म का समुचित रूप से पालन किया था।

कैकेयी साहसी महिला के रूप में पायी गयी हैं। वह राजा दशरथ के साथ युद्ध में जाती थी वह अपनी नारी हठ के कारण ही वैधव्य एवं राम ध्वन्ष का मूल कारण बनती है।

मंथरा, सुपर्णखां व ताड़का राक्षसी का दुष्ट नारी के रूप में संगणना की जाती है।

इस प्रकार रामायण काल की महिलाओं की स्थिति शिक्षा–दीक्षा, दहेज प्रथा, नारियों की वेष भूषा, पर्दा प्रथा, प्रेम का आदर्श, नारी धर्म व नारी सम्मान के बारे में रामायण और रामचरित मानस से

विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

सन्दर्भ

1. इवोल्यूशन आफ मदर वरशिप इन इण्डिया शशि भूषण दास गुप्ता (ग्रेट विमेन ऑफ इण्डिया में संग्रहीत 1953 कलकत्ता) पृष्ठ संख्या 49–50।
2. हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता–बेनी प्रसाद (पृष्ठ संख्या–50)।
3. बीमेन ऑफ इण्डिया : राधमुकुन्द मुखर्जी पृष्ठ संख्या 1।
4. पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइशेन–ए0एस0 अल्टेकर (पृष्ठ संख्या–410–411)
5. पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइशेन (ए0एस0 अल्टेकर) (पृष्ठ संख्या–31)
6. ऋग्वेद श्लोक 1/115/2।
7. वीमेन इन ऋग्वेद : भगवत शरण उपाध्याय पृष्ठ संख्या–92।
8. वीमेन इन वैदिक राज : शकुन्तला राव शास्त्री पृष्ठ 6।
9. सेशल लाइफ इन एन्शियन्ट इण्डिया, कल्चरल हेरिटेज ऑफ इण्डियाः हीरा चन्द चकलादार भाग 3 पृष्ठ 197।
10. पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन : ए0एस0 अल्टेकर पृष्ठ 12।
11. वीमेन इन ऋग्वेद भगवातशरण उपाध्याय (पृष्ठ संख्या–3) 1941 बनारस।
12. हिन्दू सीविलाइजेशन–राधाकुमुन्द मुखर्जी–1985 बम्बई पृष्ठ 40।
13. पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन : ए0एस0 अल्टेकर (पृष्ठ–239–234)।
14. हिन्दूस्तान की पुरानी सभ्यता : बेनी प्रसाद पृष्ठ संख्या–103 एवं पोजीशन ऑफ वीमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, ए0एस0 अल्टेकर, पृष्ठ संख्या–411।
15. उपर्यक्त पृष्ठ संख्या 411।
16. हिन्दू सिविलाइजेशन राधा मुकुद मुखर्जी, पृष्ठ संख्या–97।
17. पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन ए0एस0 अल्टेकर, पृष्ठ संख्या–14।
18. हिन्दू सिविलाइजेशन राधा मुकुन्द मुखर्जी पृष्ठ 141 एवं पोजीशन ऑफ वूमेन इन इण्डिया हिन्दू सिविलाइजेशन ए0एस0 अल्टेकर पृष्ठ संख्या–14।
19. दि कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया : ए0वी कीथ प्रथम भाग पृष्ठ संख्या–247।
20. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास : काशी नागिरी प्रचारिणी सभा प्रथम भाग, पृष्ठ 202–203।
21. रामायण : बाल्मीकि श्लोक 7, 91, 25।
22. रामायण : महर्षि बाल्मीकि श्लोक 3, 16, 2।
23. नारी और समाज : चिरंजी लाल पाराशर पृष्ठ 40।
24. रामायण : महर्षि बाल्मीकि 2/117/23।
25. रामायण : महर्षि बाल्मीकि 6/128, 38–6, 28, 62–2, 43, 15।
26. रामायण : महर्षि बाल्मीकि 1, 32।
27. रामायण : महर्षि बाल्मीकि 13–4, 51, 17।
28. रामायण : महर्षि बाल्मीकि 2, 38, 8–6, 114, 28।
29. रामायण : महर्षि बाल्मीकि 2, 38, 8–6, 114, 28।
30. रामायण : महर्षि बाल्मीकि।
31. रामायण : महर्षि बाल्मीकि 2, 50, 23–3, 19, 17–15, 4, 11–6, 128, 22–7, 26, 15।
32. रामायण : महर्षि बाल्मीकि 7, 25, 43।
33. रामचरित मानस : गोस्वामी तुलसी दास 2/55/2।
34. महाभारत : वेद व्यास वन पर्व 294/27।
35. महाभारत : वेद व्यास वन पर्व 294/27।
36. महाभारत : वेद व्यास धर्म पर्व 26।
37. महाभारत : वेद व्यास शान्ति पर्व 267, 31।
38. महाभारत : वेद व्यास अनुशासन पर्व 44/51।
39. महाभारत : वेद व्यास उद्योग पर्व 173/2।
40. महाभारत : वेद व्यास अनुशासन पर्व 44, 12।
41. महाभारत : वेद व्यास विराट पर्व 11/10।
42. दि पोजिशन ऑफ वीमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन : ए0एस0 अल्टेकर, पृष्ठ संख्या–189।
43. महाभारत : वेद व्यास शान्ति पर्व 141, 14।
44. महाभारत : वेद व्यास शान्ति पर्व 14/17।
45. महाभारत : वेद व्यास शान्ति पर्व 27, 37/40।
46. दि सोशल एण्ड मिलिट्री पोजीशन ऑफ दि रूलिंग कास्ट इन एन्शिएन्ट इण्डिया : हाकिन्स 283।
47. महाभारत : वेद व्यास शान्ति पर्व 30 वां सर्ग।
48. दि सोशल एण्ड मिलिट्री पोजीशन ऑफ दि रूलिंग कास्ट इन एन्शिएन्ट इण्डिया : हाकिन्स 283।
49. महाभारत : वेद व्यास वन पर्व 32/53, 32/55।
50. महाभारत : वेद व्यास वन पर्व 32/54।
51. महाभारत : वेद व्यास वन पर्व 32/56, 32/57।
52. महाभारत : वेद व्यास वन पर्व 67/30।
53. महाभारत : वेद व्यास वन पर्व 235/4।
54. अर्थशास्त्र : आचार्य कौटिल्य 5/3/9।
55. राजतरंगिणी : कल्हण 7/183–184।